सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट

प्रेस विज्ञप्ति

एंटीबायोटिक के दुरुपयोग से पॉल्ट्री फार्म में बढ़ती मल्टी–ड्रग प्रतिरोधी बैक्टीरिया, सीएसई के नए अध्ययन का खुलासा

इन फार्मों के कचरों से फैल रहा पर्यावरण में इन जीवाणुओं का खतरा – ये आसानी से लोगों को भी संक्रमित कर सकते हैं

- **सीएसई की नई प्रयोगशाला अध्ययन में पॉल्ट्री फार्म और इसके आसपास मल्टी–ड्रग प्रतिरोधी बैक्टीरिया के उच्च स्तर पाए गए हैं**
- ***ई. कोली* और *क्लेब्सीएल्ला न्यूमोनिए* जैसे बैक्टीरिया, जो मनुष्यों में गंभीर संक्रमण का कारण हो सकते हैं, उन एंटीबायोटिक्स के प्रति उच्च प्रतिरोधी क्षमता दर्शाते हैं जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मनुष्यों के लिए अत्यंत ही जरूरी हैं**
- **अध्ययन से यह भी पता चला है कि एंटीबायोटिक प्रतिरोधण कचरों के माध्यम से इन फार्मों से बाहर कृषि खेतों में फैल रहे हैं**
- **सीएसई पॉल्ट्री सेक्टर में एंटीबायोटिक के दुरूपयोग को सीमित करने की सलाह देता है**
- **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनुरोध करता है कि अपशिष्ट प्रबंधन के लिए ठोस और मानक दिशानिर्देशों को पॉल्ट्री फार्मों के लिए लागू करे जिससे कि एंटीबायोटिक प्रतिरोधण के वातावरण में फैलाव को रोका जा सके।**

नई दिल्ली, अगस्त 31, 2017: पॉल्ट्री फार्मों में एंटीबायोटिक्स का दुरूपयोग मल्टी–ड्रग प्रतिरोधी बैक्टीरिया के फैलाव का प्रमुख कारण बन रहा है। इस स्थिति को बद्त्तर बनाने के लिए, पॉल्ट्री के कचरों के असुरक्षित तथा कृषि खेतों में निबटान के चलते ये बैक्टीरिया अब पर्यावरण में फैल रहे हैं– इसमें मनुष्यों को संक्रमित करने की प्रचुर संभावना हैः इसका खुलासा हुआ है सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) के हाल ही में किए गए अध्ययन में।

यह अध्ययन – जिसका शीर्षक 'एंटीबायोटिक रेसिस्टेंस इन पॉल्ट्री एनवायरनमेंट' है – सीएसई की पॉल्यूशन मॉनिटरिंग लैबोरैटरी में आयोजित किया गया है, जिसमें यादृच्छिक तौर पर चुने गए 12 पॉल्ट्री फार्मों के आसपास के कचरे और मिट्टी से एकत्र नमूनों को लिया गया था। ये उत्तर भारत के चार प्रमुख पॉल्ट्री उत्पादक राज्यों नामतः उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और पंजाब में स्थित हैं। बैक्टीरिया के कुल 217 आईसोलेट्स – *ई.कोली, क्लेब्सीएल्ला न्यूमोनिए और स्टैफीलोक्कूस लेन्टस* – को इनमें पाया गया और 16 एंटीबायोटिक्स के विरुद्ध प्रतिरोधी पाया गया। इनमें से दस एंटीबायोटिक्स को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा मनुष्यों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण घोषित किया गया है।

अध्ययन के लिए चुने गए सीएसई द्वारा चिन्हित पॉल्ट्री फार्म नौ जिलों के 12 विभिन्न क्लस्टरों में फैले हुए हैं। सीएसई के शोधकर्ताओं ने पाया कि एंटीबायोटिक्स का उपयोग इन पॉल्ट्री फार्मों में किया जा रहा था, और कि इनसे निकलने वाले कचरों को आसपास के खेतों में खाद के तौर पर उपयोग किया जा रहा था। नियंत्रण के तौर पर, अध्ययन के अंतर्गत 12 मिट्टी के नमूनों को इन फार्मों से 10 से 20 किलोमीटर की दूरी से भी एकत्र किया गया था, जहां इसके कचरे को खाद के तौर पर उपयोग नहीं किया गया था।

सीएसई अध्ययन के निष्कर्षों को आज यहां जारी करते हुए, चंद्र भूषण, उप महानिदेशक, सीएसई ने कहाः ''पॉल्ट्री सेक्टर में एंटीबायोटिक्स का दुरुपयोग एक आम बात है। स्थिति को बद्त्तर यह वास्तविकता बनाती है कि यह सेक्टर बहुत ही खराब अपशिष्ट प्रबंधन से घिरा हुआ है। इसलिए हम सबसे पहले पॉल्ट्री एनवायरनमेंट में एंटीबायोटिक प्रतिरोधण को समझना चाहते थे, और फिर उसके बाद यह जानना चाहते थे कि क्या प्रतिरोधी बैक्टीरिया अपशिष्ट के निबटान के माध्यम से पॉल्ट्री फार्मों से बाहर वातावरण में तो नहीं फैल रहे हैं।''